

आखिर कब तक अफ्रीकी महिलाओं को पानी लाने के लिए मीलों  
चलना पड़ेगा : ग्यारहवाँ न्यूज़लेटर (2025)



पौधों को पानी देने का दिन, रोकीयो नवारो (मेक्सिको), 2024

प्यारे दोस्तो,

**ट्राईकॉन्टिनेंटल : सामाजिक शोध संस्थान की ओर से अभिवादन।**

मार्च के महीने में मनाया जाता है अंतर्राष्ट्रीय कामकाजी महिला दिवस। इस दिन का इतिहास समाजवादी आंदोलन से गहराई से जुड़ा है। आजकल ज्यादातर लोग 8 मार्च को सिर्फ 'अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' कहने लगे हैं, उन्होंने 'कामकाजी' शब्द इसमें से निकाल दिया है। लेकिन काम तो महिलाओं की जिंदगी का एक अभिन्न अंग है। संयुक्त राष्ट्र की [2024 सालाना रिपोर्ट](#) के मुताबिक 2022 में दुनिया भर में महिलाओं की श्रम शक्ति भागीदारी 63.3% थी। लेकिन सामाजिक सुरक्षा और श्रम कानूनों की बदतर होती जा रही स्थिति की वजह से 2024 तक 10% महिलाएँ पूर्ण निर्धनता में जीने को मजबूर हो गयीं। इसी रिपोर्ट में यह चेतावनी भी दी गयी है कि अगर स्थिति ऐसी ही रही तो महिलाओं को पूर्ण गरीबी से उबार पाने में 137 साल लग जाएँगे। हमारा उद्देश्य सिर्फ पूर्ण गरीबी को खत्म करना ही नहीं होना चाहिए बल्कि लोगों को अपनी जरूरतों के बोझ से भी छुटकारा दिलाया जाना चाहिए।

संयुक्त राष्ट्र के विकास कार्यक्रम (UNDP) की एक रिपोर्ट में अनुमान लगाया गया है कि उप-सहारा के देशों की महिलाओं के सालाना चालीस अरब घंटे पानी लाने में लगते हैं, यह फ्रांस के पूरे श्रम बल के एक साल के काम के घंटों के बराबर है। पूरे उप-सहारा क्षेत्र में पानी की सुविधाओं के लिए इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार करने में जितने धन की जरूरत है और जितना धन इस काम के लिए उपलब्ध है, उसमें अन्दाज़तन 11 अरब अमेरिकी डॉलर का फ़र्क है। ऑक्सफैम के अनुसार यह दुनिया के अरबपतियों की दो दिन की आमदनी के बराबर है। उप-सहारा के देश अपना कर्ज़ अदा करने के लिए प्रतिदिन 447 लाख डॉलर चुकाते हैं, अगर वे 25 दिन यह धन पीने के पानी की सुविधाओं के लिए लगाएँ तो इस क्षेत्र के हर घर तक पाइप द्वारा पीने का पानी पहुँचाया जा सकता है। लेकिन दुनिया को फ़र्क नहीं पड़ता कि अफ्रीकी महिलाएँ मीलोंमील चलकर पीने का पानी लाने को मजबूर हैं जबकि इस धरती पर जो सामाजिक संसाधन पैदा किए जा रहे हैं उनके छोटे से हिस्से को खर्च करके ही इन्हें इस काम से आज़ाद कराया जा सकता है। इस काम के लिए पाइप बनाने और अन्य यंत्रों के निर्माण से उद्योगों का विकास होगा जिससे रोज़गार उत्पन्न होगा और लोगों को उस गरीबी से उबारा जा सकेगा जो दुनिया भर की औरतों को दबोचे हुए है।



शीर्षकहीन, साउद अल-अत्तर (इराक), 1966

पीने का पानी लाने के लिए मीलों चलने को मजबूर इन महिलाओं में से ज्यादातर ग्रामीण इलाकों में रहती हैं और खेतिहर मजदूर या छोटे किसान के तौर पर काम करती हैं। इनके लिए पानी लाने के काम और मातृत्व, पालन-पोषण इत्यादि जैसे अन्य कामों पर घंटों लगाने का मतलब है कि खेतों में उनकी उत्पादकता कम हो जाना। पहले ही पुरुषों के मुकाबले उनकी औसत उत्पादकता की दर 24% कम है (यह तथ्य संयुक्त राष्ट्र खाद्य और कृषि संगठन की 2023 की [\[1\] \[2\] \[3\] \[4\] \[5\] \[6\] \[7\] \[8\] \[9\] \[10\] \[11\] \[12\] \[13\] \[14\] \[15\] \[16\] \[17\] \[18\] \[19\] \[20\] \[21\] \[22\] \[23\] \[24\] \[25\] \[26\] \[27\] \[28\] \[29\] \[30\] \[31\] \[32\] \[33\] \[34\] \[35\] \[36\] \[37\] \[38\] \[39\] \[40\] \[41\] \[42\] \[43\] \[44\] \[45\] \[46\] \[47\] \[48\] \[49\] \[50\] \[51\] \[52\] \[53\] \[54\] \[55\] \[56\] \[57\] \[58\] \[59\] \[60\] \[61\] \[62\] \[63\] \[64\] \[65\] \[66\] \[67\] \[68\] \[69\] \[70\] \[71\] \[72\] \[73\] \[74\] \[75\] \[76\] \[77\] \[78\] \[79\] \[80\] \[81\] \[82\] \[83\] \[84\] \[85\] \[86\] \[87\] \[88\] \[89\] \[90\] \[91\] \[92\] \[93\] \[94\] \[95\] \[96\] \[97\] \[98\] \[99\] \[100\]](#) में सामने आया)। कृषि क्षेत्र में महिलाओं की स्थिति पर प्रामाणिक आँकड़े कम मिलते हैं। इसकी मुख्य वजह है कि दुनिया के कई हिस्सों में महिलाओं को किसानों के रूप में नहीं बल्कि खेतों में उनके सहायकों के रूप में देखा जाता है। इस रवैये की वजह से महिलाओं और पुरुषों की मजदूरी में भारी असमानता है; महिला खेतिहर मजदूरों को औसतन पुरुषों के मुकाबले 18.4% कम मजदूरी मिलती है।

इस पितृसत्तात्मक नज़रिए को बदलने के लिए संयुक्त राष्ट्र की आमसभा ने एक प्रस्ताव पारित करते हुए 2026 को महिला किसानों को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय वर्ष घोषित किया है। उम्मीद है कि इस दौरान कृषि खाद्य प्रणालियों में महिलाओं की भूमिका को उजागर करने वाले कार्यक्रम ही नहीं आयोजित किए जाएंगे बल्कि उन प्रगतिशील सरकारों की भूमिका को भी सामने लाया जाएगा जो कृषि क्षेत्र में महिलाओं के साथ होने वाले भेदभाव को खत्म करने के एजेंडे आगे बढ़ा रही हैं और यह भी सुनिश्चित कर रही हैं कि किसान यूनियनों में महिलाओं को नेतृत्वकारी भूमिका मिले।



ए कैपिरिन्हा (ब्राज़ील का एक प्रसिद्ध पेय) तरसिला डो अमराल (ब्राज़ील), 1923

‘कृषि खाद्य प्रणालियाँ’ कहकर कृषि के विचार को विस्तार दिया जाता है। संयुक्त राष्ट्र का खाद्य एवं कृषि संगठन (FAO) कृषि खाद्य प्रणाली की यह परिभाषा देता है कि इसमें ‘उन सभी हितधारकों और उनकी परस्पर संबद्ध गतिविधियों की पूरी श्रृंखला शामिल है जो खाद्य और गैर-खाद्य कृषि उत्पादन और कृषि संबंधित गतिविधियों जैसे कि खाद्य भंडारण, एकत्रीकरण, कटाई के बाद की देखभाल, दुलाई, प्रसंस्करण, वितरण, विपणन, निपटान और उपभोग में मूल्यवर्धन करती हैं।’ इस परिभाषा से ही जेंडर आधारित भेदभाव स्पष्ट हो जाता है : चूँकि महिलाओं को ऐसे कामों से दूर रखा जाता है जो मूल्यवर्धन चेन के शीर्ष पर हैं (जैसे दुलाई, प्रॉसेसिंग, वितरण, भंडारण और मार्केटिंग) इसलिए इस उद्योग क्षेत्र में वे पुरुषों से कम कमाती हैं।

वैश्विक दक्षिण के कई हिस्सों में महिलाएँ कृषि खाद्य प्रणालियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं और कृषि उनकी आय का एक बड़ा साधन है (अफ्रीका के सब-सहारा क्षेत्र में 66% महिलाएँ कृषि क्षेत्र में काम करती हैं जबकि पुरुषों में यह आँकड़ा 60% है, दक्षिण एशिया में तो 71% महिलाएँ कृषि क्षेत्र में काम करती हैं और पुरुष सिर्फ 47%)। दुनिया के इन हिस्सों में महिलाएँ अपने परिवार और अपने भरण पोषण के लिए कृषि क्षेत्र में अपने कम आय वाले काम पर ही निर्भर हैं। जब उनका रोजगार गिरता है तो महिलाएँ अपने परिवार का पेट भरने की जद्दोजहद में लग जाती हैं और खुद भूखी तक रह जाती हैं। बहुपक्षीय संस्थानों को जो देश आँकड़े देते हैं उनसे पता चलता है कि दुनिया में महिलाएँ पुरुषों के मुकाबले कहीं ज्यादा भुखमरी का शिकार हैं। इसकी वजह है कृषि क्षेत्र में वे असंगठित मजदूर के तौर पर काम करती हैं और पितृसत्तात्मक पारिवारिक संरचनाओं में खाना खाने या मिलने में भी वे भेदभाव झेलती हैं।



आदि-अंत, रिकेल फ़ोरनेर (अर्जेन्टीना), 1980

जलवायु परिवर्तन का सबसे पहला प्रभाव भी कृषि व्यवस्था पर पड़ता है और यह कोई अचंभे की बात नहीं कि अपने खेतों और परिवारों को इसके कुप्रभाव से बचाने की जिम्मेदारी आमतौर पर महिलाओं पर आ जाती है। FAO की 2024 की [\[1\]\[2\]\[3\]\[4\]\[5\]\[6\]\[7\]\[8\]\[9\]\[10\]](#) रिपोर्ट में जो आँकड़ा दिया गया है उसे पचा पाना बहुत मुश्किल है। पहला तथ्य, जब कोई प्राकृतिक आपदा (भीषण गर्मी या बाढ़ आदि) आती है तो तो महिलाओं के काम के घंटे 'पुरुषों के मुकाबले लगभग चार, तीन और एक मिनट के हिसाब से प्रतिदिन अत्यधिक बारिश, तापमान और सूखे की स्थिति में क्रमशः बढ़ते जाते हैं'। काम के घंटे में इस इजाज़े का औसत लगाएँ तो पता चलता है कि प्राकृतिक आपदाओं की वजह से होने वाले नुकसान की भरपाई के लिए महिलाएँ पुरुषों से 55 मिनट ज्यादा काम करने को मजबूर हैं। दूसरा तथ्य, तापमान में 1°C (33.8 °F) की दीर्घकालिक बढ़ोतरी 'खेती से होने वाली आय में 23.6% और पुरुष-प्रधान परिवारों के मुकाबले स्त्री-प्रधान परिवारों की कुल आय में 34% गिरावट से जुड़ी है'। जब भीषण गर्मी पड़ती है तो महिलाएँ अपने खेतों में काम करने की बजाय अपना श्रम काम दामों पर खेतिहर मज़दूर या घरेलू कामगार के तौर पर बेचने को मजबूर होती हैं, जिससे उनकी आय और भी कम हो जाती है।

तीसरा तथ्य, यह पता चलता है कि भीषण गर्मी के दौरान पुरुषों के मुकाबले महिलाएँ अपने मवेशी ज्यादा बेचती हैं जिससे पशुपालन से होने वाली आय तो कम होती ही है बल्कि कृषि में इनके प्रयोग से होने वाली उत्पादकता भी घटती है। अंतिम तथ्य, FAO की रिपोर्ट बताती है कि बाढ़ के दौरान अमीर परिवारों के मुकाबले ग़रीब परिवारों की कुल आय 4.4% कम हो जाती है (बाढ़ की वजह से वैश्विक दक्षिण के ग़रीब परिवारों को 21 अरब डॉलर का कुल नुकसान होता है)। FAO के शोध का मुख्य निष्कर्ष यह है कि प्राकृतिक आपदाओं का सभी ग़रीब परिवारों पर असर पड़ता है लेकिन इस प्रभाव का जेंडर आधारित पहलू है जो महिला और पुरुष किसानों के बीच की निरंतर बढ़ती खाई को और गहरा करता है।



फ़ैमिली पोर्ट्रेट, जिना अमॉर (अल्जीरिया), 1967

ऐसी परिस्थितियों में क्या किया जा सकता है? संयुक्त राष्ट्र जैसे संस्थानों के पास रामबाण के तौर पर एक शब्द है : सशक्तीकरण। लेकिन महिलाओं का सशक्तीकरण होगा कैसे? कितने ही प्रस्ताव पारित हो चुके हैं जो 'सरकारों को जवाबदेह बनाने' और 'महिलाओं को अथॉरिटी वाले पदों पर पहुँचाया जाए' जैसी बातें करते हैं। लेकिन ये सब इस समस्या की जड़ तक नहीं पहुँचते : ग्रामीण इलाकों में कानूनी दांवपेच या हिंसा के ज़रिए [\[2\]\[2\]\[2\]](#) खेतिहर मज़दूरों को यूनियन बनाने से अमूमन रोका जाता है। 1975 में अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन ने ग्रामीण श्रमिक संगठन कन्वेंशन पारित किया जिसके अनुच्छेद 3 में कहा गया : ग्रामीण श्रमिकों की सभी श्रेणियों को, चाहे वे वेतनभोगी हों या स्वरोजगार वाले, बिना किसी पूर्व अनुमति के अपनी पसंद के संगठन स्थापित करने और संबंधित संगठन के नियमों के अधीन रहते हुए, उसमें शामिल होने का अधिकार है'। इस कन्वेंशन पर खास ध्यान नहीं दिया गया। जिन ग्रामीण श्रमिक संगठनों के नेताओं और कार्यकर्ताओं की हत्याएँ की गयीं हैं अगर उनकी लिस्ट बनाई जाए तो पूरी अलमारी भर जाएगी, इनमें 2023 में ग्वाटेमाला की डोरिस लिस्सेथ ऐल्डाना कैल्डरोन से लेकर 2024 में भारत के शुभकरन सिंह तक कइयों के नाम शामिल होंगे।



作波画

责任的均与的解释

责任均匀的解释 (बराबर ज़िम्मेदारी की समझ) लीयंग बाएबो (चीन), 1938

खेतिहर मज़दूरों को संगठित कर उनकी यूनियन बनाए बिना उन्हें उनके अधिकार नहीं दिलाए जा सकते हैं। 2022 में ब्राज़ील के भूमिहीन मज़दूर आंदोलन (Movimento dos Trabalhadores Rurais Sem Terra, MST) से जुड़ी महिलाओं ने एक बेहतरीन खुला पत्र जारी किया। इसका शीर्षक था *'Open Letter of Love and Struggle from Landless Women'* (भूमिहीन महिलाओं की ओर से प्रेम और संघर्ष का खुला पत्र)। MST पर हमने एक डोसियर निकाला था जिसे यहाँ पढ़ा जा सकता है। इसका कुछ अंश नीचे दिया जा रहा है :

हमने कितनी बार पानी उबाला है, बच्चों की देखभाल की है, अपनी पुरुषैनी ज़मीनों को अगली पीढ़ियों के लिए तैयार किया है, नामुमकिन हालात में घर बनाए और इससे पहले कि कोई सुन पाए तनाव भरे सन्नाटे तोड़े हैं। हम तड़के अपने घरों से निकलती हैं और मौत की रेलगाड़ी रोकती हैं, ज़हर से भरे ट्रक रोकती हैं और कृत्रिम बीजों की बुआई रोकती हैं। मिट्टी में सने हुए हमने आँसू बहाए हैं, अपने मृतक परिजनों को दफ़नाया है। संघर्ष और प्रार्थना से हमने खुद को और अपनी ज़मीनों को बचाए रखने की ताकत पाई है। अपनी आत्मा से हम मरहम बनाती हैं। हम प्रतिरोध की अपने पुरखों की परंपरा को आगे बढ़ाती हैं जो हमें अपने संघर्ष के रास्ते पर बढ़ने के लिए प्रेरित करता है। चिता (ब्राज़ील का एक किस्म का कपड़ा) के कपड़े में क्रोध, भय और खुशी सभी रंगों में लिपटी हम अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रही हैं। दुनिया को पता चलने दो कि अब धरती हिलाने का समय आ गया है क्योंकि संघर्षरत महिलाएँ हार मानने वाली नहीं! मार्च का महीना हमें जीवन की नई संभावनाएँ गढ़ने, और उस विचार से लड़ने के लिए प्रेरित करता है जो हर दिन हमारी ज़िंदगी बर्बाद कर रहा है और हमारे शरीर और प्रकृति को नष्ट कर रहा है।...

ताक़तवर वर्ग को इसलिए लगता है कि हम घुटने टेक देंगी क्योंकि उन्हें अब तक समझ नहीं आया कि हम सृजनकर्ता हैं, हम इंसान और बीज दोनों बनाती हैं। जहाँ कहीं भी महिलाएँ हैं वहाँ उम्मीद भी होगी, संगठन भी, संघर्ष भी, साहस भी और विद्रोह भी। हमारे सामने कई चुनौतियाँ हैं लेकिन हम संघर्ष की पहली पंक्ति में खड़ी लड़ती रहेंगी क्योंकि इतिहास हमारा भी है और हम इसे गढ़ेंगी सड़कों पर, संघर्ष में और खेतों में। हमसे पहले संघर्ष में शहीद हुई अपनी साथियों से हमें हिम्मत मिलती है। वे भले ही दुनिया में नहीं हैं लेकिन हमारे भीतर अब भी ज़िंदा हैं। वे सूरज की उन किरणों जैसी हैं जो युद्ध के दौर में भी रोशनी फैलाती हैं, एक ऐसा सूरज जो हमें झकझोरता है, उद्वेलित करता है।

सस्नेह,

विजय